

संख्या ५ संवत् १९५५
राष्ट्रीय लोक अदालत
द्वयम या कायेवाही वाय
इतिविशयस्य ज्ञान

महाराष्ट्र शासन
पर शासिक विज्ञान के इतिहास
के अन्तर्गत के मत-प्रवृत्ति
विषय।

इस प्रकार वास्तविकता
को विचारने के लिये (उदाहरण
उदाहरण के प्रयोग)

उदाहरण

प्रमाण और शक्तियों का अन्तर्गत के
तहत वेच के समान प्रयोग हुआ।

पक्ष वादी ने अपने शक्तियों को अन्तर्गत
तहत आगे नहीं चलाकर इतिहास
पर शासिक करने हेतु मत-प्रवृत्ति
विषय को।

इस प्रकार वास्तविकता के
तहत पक्ष वादी के मत-प्रवृत्ति के
कारण यह इतिहास पर शासिक
विषय वास्तविकता के अन्तर्गत
हेतु नकार के अन्तर्गत शासिक
प्रवृत्ति है।

राष्ट्रीय लोक अदालत

राष्ट्रीय लोक अदालत